

[रामकृष्ण आश्रम, ग्वालियर
के स्वर्ण जयंती समारोह के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल द्वारा उद्घाटन
के अवसर पर दिया गया
श्री रमेश चन्द्र लाहोटी, पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति, सर्वोच्च न्यायालय, भारत
का अध्यक्षीय वक्तव्य, दिनांक 04.10.2008]

महामहिम राष्ट्रपति जी /
माननीय राज्यपाल जी /
माननीय मुख्यमंत्री जी /
रामकृष्ण आश्रम के प्रमुख श्रद्धेय स्वामी स्वरूपानन्द जी /
रामकृष्ण मिशन के श्रद्धेय सन्यासी महानुभाव एवं भक्तजन, सभागार में उपस्थित
सभ्रांत एवं सुसंस्कृत देवियो एवं सज्जनवृंद एवं मित्रगण।

रामकृष्ण आश्रम ग्वालियर की स्वर्ण जयंती समारोह के उद्घाटन एवं 'रोशनी' भवन के लोकार्पण के सुअवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में, भारतवर्ष की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, प्रदेश के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री महोदय तथा अन्य सभी आदरणीय अतिथिगण का स्वागत एवं उनकी उपस्थिति के लिए आभार ज्ञापित करते हुए, इस स्वर्ण जयंती समारोह समिति के अध्यक्ष के रूप में मुझे अत्यन्त हर्ष और सात्विक गर्व की अनुभूति हो रही है। हमारी राष्ट्रपति जी देश-भक्ति और कर्तव्य परायणता के साथ-साथ नारी शक्ति, मातृशक्ति और दैवी शक्ति की प्रतीक हैं। यह सुखद संयोग है कि ग्वालियर नगर में उनका पदार्पण नवरात्रि एवं दुर्गा पूजा के पावन दिनों में हुआ है। यह मात्र संयोग ही नहीं, एक दुर्लभ और आनन्दातिरेक की अनुभूति कराने वाला आध्यात्मिक प्रसंग है।

रामकृष्ण आश्रम का सूत्र वाक्य है— 'आत्मनो मोक्षार्थं, जगद् हिताय च: (अपने मोक्ष के लिए, विश्व के हित के लिए) । इस सूत्र में भारतीय संस्कृति का सार है; ऐसे मन, वाणी और कर्म जिससे सकल विश्व का हित होता हो उसी से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है; और, जिस मार्ग से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है उसी मार्ग का अनुसरण करने से विश्व का कल्याण होता है। विश्व में जितने धर्म प्रचलित हैं उन सभी का यही सन्देश है ।

श्रद्धेय स्वामी स्वरूपानन्द जी ने रामकृष्ण आश्रम ग्वालियर के स्वर्ण जयंती समारोह के लिए श्रीमद्भगवत गीता के पांचवे अध्याय के सोलहवें श्लोक को आदर्श वाक्य के रूप में 'लोगो' (प्रतीक चिन्ह) का अंश बनाया है—

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥

(जब कोई उस ज्ञान से प्रबुद्ध होता है जिससे अविद्या का विनाश होता है तो उसके ज्ञान से सब कुछ उसी तरह प्रकट हो जाता है जैसे दिन में सूर्य से सारी वस्तुएं प्रकाशित हो जाती हैं)

भगवान रामकृष्ण के परम प्रिय शिष्य एवं उत्तराधिकारी स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन के उद्देश्यों को तीन सूत्रों में परिभाषित किया है। प्रथम, भगवान रामकृष्ण के जीवन के सही अर्थ और उद्देश्यों का अन्तर्दशन कर उनसे साक्षात्कार किया जाये। द्वितीय, भारतवर्ष के विश्वगुरु के पद से अधोपतन के वास्तविक कारणों को समझ कर उसके पुनरुत्थान के साधनों की खोज की जाए। एवं, तृतीय, सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति, आचार—विचार और क्रिया को भारतीय आध्यात्म के ओज से अनुप्राणित किया जाए।

हमारा देश आज गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है। ये चुनौतियां बाह्य भी हैं, आन्तरिक भी। जो आन्तरिक हैं वे बाह्य से अधिक गंभीर हैं। गीता के उपरोक्त श्लोक में जिस रोशनी का संकेत किया गया है उससे आशा और प्रेरणा का संचार हृदय में होता है।

हर तरफ कितना अंधेरा आज है फैला हुआ,
किन्तु सबकी ज़िंदगी फिर से संवरनी चाहिए,
हर कहीं मुस्कान हो शुभकामनाओं से जुड़ी,
रोशनी ही रोशनी की बात करनी चाहिए।¹

इस रोशनी का अविर्भाव कैसे हो और व्याप्त तमस पर ज्योति की विजय कैसे हो। आज के अवसर का लाभ उठाते हुए, भगवान रामकृष्ण से प्रेरणा प्राप्त करते हुए, महामहिम राष्ट्रपतिजी का ध्यान एक विचार की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने एक नारा दिया— ‘इंडिया 2020’ अर्थात् भारतवर्ष सन् 2020 तक एक प्रगति की पराकाष्ठा पर पहुंचा हुआ उन्नत देश होना चाहिए। देश को एक दिशा मिली और इस दिशा में कुछ काम शुरू भी हुआ है। डॉ. कलाम के उद्घोष में एक शक्ति है जो भारतवासियों के चिन्तन और कर्म के लिए एक सशक्त दिशाबोधक प्रेरणा बन गई है। मैं महामहिम राष्ट्रपतिजी से अनुरोध करना चाहता हूं कि वे भारत को विश्वगुरु का स्थान दिलाने के लिए एक सूत्र अपने आदर्श वाक्य के रूप में— अपने उद्घोष के रूप में दें,— और यह सूत्र हो— ‘संस्कृत, संस्कृति और संस्कार’। हम भारतवासी उदार दृष्टिकोण वाले लोग हैं। हमने सारे संसार से जो भी हमारे यहां आया उसका स्वागत किया है। उनसे लेकर, सीखकर और अपनाकर स्वयं को समृद्ध भी किया है। किन्तु समृद्धि और प्रगति के साथ विकार भी आए हैं विशेषकर उस युवा पीढ़ी में जिसकी पाश्चात्य जीवन पद्धति से अधिक मेल—मुलाकात हुई है।

संस्कृत भारतीय संविधान की आठवीं सूची में उल्लिखित भाषाओं में से एक है। संविधान का एक भूला बिसरा अनुच्छेद है — अनुच्छेद 351², जो यह विशेष निर्देश संघ (अर्थात् केन्द्र) को उसके कर्तव्य के रूप में देता है कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की

¹ (डॉ. भगीरथ बड़ोले, (पूर्व) आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विश्वविद्यालय, उज्जैन)

² भारत का संविधान/भाग-17/अध्याय 4-विशेष निर्देश/ 351. हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश— संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द—भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके; भारतीय भाषाओं के शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए मुख्यतः संस्कृत का आश्रय लिया जाये। संस्कृत साहित्य हमारे मानसिक और आध्यात्मिक ज्ञान का भंडार है। संस्कृत भारत की आत्मा और विवके की वाणी है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल जी ने कहा था कि संस्कृत भाषा और साहित्य और उससे संबंधित सारा वाङ्मय भारत की महानतम निधि और सर्वोत्कृष्ट विरासत की धरोहर है; यदि भारतवासी बुद्ध, उपनिषद तथा रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों को भूल जाएंगे तो भारत भारत नहीं रहेगा। हमें उस भविष्यदृष्टा के वक्तव्य का मर्म समझना चाहिए। ऐसे ही विचार सर मिर्जा स्माइल, सर विलियम जॉन्स, मैक्समूलर, पूर्व राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद, डॉ. राधाकृष्ण, डॉ. के. आर. नारायण, महात्मा गांधी और भारतरत्न डॉ. अम्बेडकर ने भी व्यक्त किए हैं। डॉ. अम्बेडकर ने तो संस्कृत को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में समर्थन देने वाला प्रस्ताव संविधान सभा के समक्ष रखा था और वे चाहते थे कि अखिल भारतीय हरिजन संघ की कार्यकारिणी समिति भी संस्कृत को भारत की राजभाषा बनाने के समर्थन में प्रस्ताव पारित करे।

संस्कार मानव-मूल्यों की आधारशिला हैं। हमारे संस्कार वास्तव में हमारी प्रगति और समृद्धि का विधान हैं। वे एक लंबे समय तक भारतीय जीवन दर्शन का अभिन्न अंग बने रहे हैं। संस्कारित जीवन मानव जीवन को आदर्श जीवन का स्वरूप प्रदान करता है। आज जबकि हमारे लोक जीवन के मूल्य तेज गति से नीचे गिर रहे हैं तब भी हम चल रहे हैं, गिरे नहीं हैं। क्यों? इकबाल ने लिखा है—

यूनान-ओ-मिश्र-ओ-रोमा, सब मिट गए जहां से।
अब तक मगर है बाकी नामो-निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जमां हमारा।।

इकबाल ने अपनी नज़्म में जिस 'कुछ बात' की ओर संकेत किया है वह है— हमारे संस्कार जो हमारी संस्कृति की देन हैं और संस्कृति जो संस्कृत से प्रसूत है। हमारी संस्कृति अलग-अलग चिन्तन, विचारधाराओं और क्रियाओं में निरन्तर परस्परिता और अवलम्बिता देखती है। हमारी संस्कृति का उच्चतर प्रयोग मानवीय चित्तवृत्ति को गंभीर से गंभीरतर साधनों और महानतम लक्ष्यों की ओर उत्प्रेरित करता है। हमें विश्व को वह देना चाहिए जो हमारा अपना है और जो देने के लिए प्रचुर मात्रा में हमारे पास उपलब्ध है— योग, transcendental mediation , हमारा ज्ञान, हमारी विद्याएं और हमारी सांस्कृतिक विरासत।

संस्कृत की समृद्धि देखिए। नेशनल मैन्यूस्क्रिप्ट मिशन (एन.एम.सी.) के अनुसार अनेक संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में संस्कृत की लगभग आठ लाख पांडुलिपियां संग्रहित हैं और हजारों की संख्या में ऐसी पांडुलिपियां कुछ व्यक्तियों के पास बिखरी पड़ी हैं। कुछ भारतवर्ष से विदेशों में जा चुकी हैं। हमारा राष्ट्रीय आदर्श है 'सत्यमेव जयते'। लोकसभा का सूत्र है— 'धर्मचक्रप्रवर्तनाय'। भारत के सर्वोच्च न्यायालय का शीर्ष सूत्र है— 'यतो धर्मस्ततो जयः'। जीवन बीमा निगम के अस्तित्व का आधार है— 'योगक्षेमं वहाम्यहम्'। हमारे डाकतार विभाग की सेवाओं का ऊर्जा-श्रोत है— 'अहर्निशं सेवामहे'। हमारे

राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' की भाषा नब्बे प्रतिशत संस्कृत और दस प्रतिशत संस्कृत-मूलक है। हमारे सारे आदर्श-सूत्रों का श्रोत हमारा संस्कृत साहित्य है फिर भी संस्कृत के प्रयोग, प्रसार, प्रचार में हमारी अभिरुचि सुप्त है।

महामहिम राष्ट्रपतिजी, रामकृष्ण आश्रम की स्वर्ण जयंती समारोह के शुभारंभ में आपकी उपस्थिति इस देश के स्वर्णिम भविष्य के शुभारंभ का दिन भी हो सकती है; 'आत्मनो मोक्षार्थं जगद् हिताय चः' और दिव्य ज्ञान का प्रकाशित कर अविद्या और अज्ञान के विनाश की क्रांति के सूत्रपात का अवसर बन सकती है यदि आप यह उद्घोष करें कि आपके कार्यकाल में इस देश में संस्कृत, संस्कृति और संस्कारों का पुनर्जागरण आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता होगा। सारा विश्व यह मान रहा है कि आने वाले तीन दशकों में भारतवर्ष विश्व की चार शीर्षस्थ शक्तियों में से एक बनकर खड़ा होगा किन्तु प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि एक विश्व शक्ति के रूप में उभरकर यह देश विश्व को अनाचार देगा या संस्कार, विकृति देगा अथवा संस्कृति? आप भारतीय नारी के आदर्श और दैवी शक्ति की प्रतीक हैं। आज सारा देश ही नहीं सारा विश्व भारत जैसे विशाल देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति की ओर बड़ी आशा भरी नजरों से देख रहा है और यहां उपस्थित जनसमुदाय आश्वस्त है कि आने वाले समय के लिए आप देश को दिशाबोध करा सकती हैं। हम सबकी शुभकामनाएं, भगवान रामकृष्ण और मां शारदा का आशीर्वाद, विवेकानन्द की ओजमयी शक्ति सदैव आपके साथ है।

.....